जैन धर्म की रुपरेखा

लेखक
पू आ देव विक्रम सूरीश्वरजी म
के
शिष्य
मुनि राजयश विजय

प्रकाशक
कस्तुरचद झवेरी
श्री लब्धिसूरीश्वरजी स्मारक संस्कृति केन्द्र,
प्रार्थना समाज,
बबई–२

मुद्रण स्थान –
श्री प्रिटींग प्रेस
सटल एव्हेन्यु, चितार आली,
नागपूर–२
फोन ४०६६०

हिंदी प्रथम संस्करण, जनवरी, १९७२

प्रति १० हजार

द्रव्य सहायक –
श्री सम्मेत शिखरजी
महातीर्थयात्रा अनुमोदना समिति

कार्यालय
कुंथुनाथ जैन मंदिर,
६२, महात्मा गांधी रोड,
सिकन्दराबाद (A P)

निवेदन

लब्धिसूरीश्वरजी स्मारक संस्कार केन्द्र की ओर से प्रगटित इस पुस्तिका का क्रमांक आठवाँ है।

गुजराती में इस लघु पुस्तिका की द्वितीय आवृत्ति प्रगट हो चुकी है। उपयोगिता का यह सबूत है।

हमने दूसरे संस्करण में इस पुस्तिका की ५००० प्रतियाँ गुजराती में प्रसिद्ध करवाई है।

आज श्री सम्मेत शिखरजी महातीर्थयात्रा अनुमोदना समिती की ओर से इस पुस्तिका की १० हजार प्रतियाँ का प्रसिद्ध करने का शुभ संकल्प हुआ है।

हम इस ऐतिहासिक महायात्रा एवं उनकी अनुमोदना समिति के प्रति सफलता चाहते है।

नागपुर निवासी रतिलाल शाह (श्री प्रिंटिंग प्रेस) ने अल्प समय एवं अल्प मूल्यमें इस कार्य में योगदान दिया उनके भी हम ऋणी है। इस पुस्तक का मिष्ट शान्ति जब अल्पावधिमें शीघ्रातिशीघ्र

भाषांतर करके श्री शांतीलाल वार्सी वाला ने दिया है। आपको 'जन रामायण' में Ph D का पद प्राप्त हुआ है। और स्वयं वार्सी कॉलेज के प्राध्यापक है। आपकी सिद्धि एवम सहाय दाता की हम अनुमोदना करते है। हम आपसे आशा करते है कि आप ऐसी ही धर्मश्रद्धा के साथ शासन कार्य में सच्च अर्पित रहेंगे। अतत साक्षात या परंपरा से जिन महात्माओने हमे सहाय दी उन सबकी अनुमोदना करते है।

प्रकाशक
कस्तुरचंद झवेरी

॥ जयउ सव्वण्णु सासणं ॥
। श्री समेतशिखरस्य पार्श्वनाथाय नम ।
। श्री आत्मकमललब्धिसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नम ।

मेरी बात

एक स्वप्न था, या कहीये शासन के रक्षक आचार्यों की तीव्रतम इच्छा थी, या कहीये कि शासन के दुलारों की महत्वाकांक्षा थी। इन सबका प्रयत्न हुआ ९ नवम्बर १९७१ का व ७ के दिन।

सिकंद्राबाद से समेतशिखरजी महातीर्थ का छ'री पालित संघ निकला। कल तक इस संघ की कल्पना भी मुश्किल था। आज वह आंखो से देखा हाल—निर्विवाद सत्य बन चुका है।

पू आचार्यदेव विजय लब्धिसूरीश्वरजी महाराजा जो मात्र जैन संस्कृति के ही नहीं अपितु भारतीय गीर्वाण गिरा एव विचारधाराओ के अधिकृत महाविद्वान् थे। जन धर्म में आपने ' गुणानुराग " नामक सुवास को सबमे अधिक प्रसारित किया है। उन महात्मा के शिष्य प्रशिष्य पू आचार्यदेव विजय जयंतसूरीश्वरजी म सा , पू आचार्यदेव विजय विक्रमसूरीश्वरजी म सा , पू आचार्यदेव विजय नवीनसूरीश्वरजी म सा तथा

भाषांतर कार्य श्री मोतीलाल बार्मी वाला ने किया है। आपको 'जैन रामायण' में Ph D का पद प्राप्त हुआ है। और स्वयं वर्सी कॉलेज के प्राध्यापक हैं। आपकी सिद्धि एवम् सहाय दोनों की हम अनुमोदना करते हैं। हम आपसे आशा करते हैं कि आप ऐसी ही धर्मश्रद्धा के साथ ज्ञान कार्य में सदैव अग्रसर रहेंगे। अंत में साक्षात् या परंपरा से जिन महात्माओंने हमें सहाय दी उन सबकी अनुमोदना करते हैं।

प्रकाशक

कस्तुरचंद झवेरी

।। जयउ सव्वण्णु सासणं ।।

। श्री समेतशिखरस्य पार्श्वनाथाय नमः ।

। श्री आत्मकमललब्धिसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ।

मेरी बात

एक स्वप्न था, या कहीये शासन के रक्षक आचार्यों की तीव्रतम इच्छा थी या कहीये कि शासन के दुलारों की महत्वाकांक्षा थी। इस सबका प्रयत्न हुआ ९ नवम्बर १०७१ का व ७ के दिन।

सिकन्द्राबाद से समेतशिखरजी महातीर्थ का छ री पालित संघ निकला। कल तक इस संघ की कल्पना भी मुश्किल था। आज वह आँखों से देखा हुआ—निर्विवाद सत्य बन चुका है।

पू आचार्यदेव विजय लब्धिसूरीश्वरजी महाराजा जो मात्र जैन संस्कृति के ही नहीं अपितु भारतीय गीर्वाण गिरा एवं विचारधारा के अधिकृत महाविद्वान थे। जैन धर्म में आपने "गुणानुराग" नामक सुवास का सर्वत्र अधिक प्रसारित किया है। उन महात्मा के शिष्य प्रशिष्य पू आचार्यदेव विजय जयंतसूरीश्वरजी म सा पू आचार्यदेव विजय विक्रमसूरीश्वरजी म सा पू आचार्यदेव विजय नवीनसूरीश्वरजी म सा, तथा

भाषांतर करने श्री धातीलाल बार्सी वाला ने दिया है। आपका जन रामायण' म Ph D का प० प्राप्त हुआ है। और स्वय बार्सी कालेज के प्राध्यापक है। आपकी सिद्धि एवम सहाय दोनो की हम अनुमोदना करत है। हम आपस आशा करत है कि आप ऐसी ही धमश्रद्धा व साथ शासन कार्य म सदव अवित रहेंगे। अतत साक्षात् या परपरा से जिन महात्माओने हम सहाय दी उन सबकी अनुमोदना करते है।

प्रकाशक

कस्तुरचद झवेरी

॥ जयउ सम्यग् सासणं ॥
। श्री समेतशिखरस्य पार्श्वनाथाय नमः ।
। श्री आत्मकमललब्धिसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ।

मेरी बात

एक स्वप्न था, या कहीये शासन के रक्षक आचार्यों की तीव्रतम इच्छा थी या कहीये कि शासन के दुलारों की महत्वाकांक्षा थी। इन सबका प्रत्यक्ष हुआ ७ नवम्बर १९७१ का व ७ के दिन।

सिकन्द्राबाद से समेतशिखरजी महातीर्थ का छ'री पालित संघ निकला। कल तक इस संघ की कल्पना भी मुश्किल था। आज वह आँखों से देखा हाल-निर्विवाद सत्य बन चुका है।

पू. आचार्यदेव विजय लब्धिसूरीश्वरजी महाराजा जो मात्र जैन संस्कृति के ही नहीं अपितु भारतीय गीर्वाण गिरा एवं विचारधाराओं के अधिकृत सर्वविद्वान थे। जैन धर्म में आपने "गुणानुराग" नामक सुवास को सबसे अधिक प्रसारित किया है। उन महात्मा के शिष्य प्रशिष्य पू. आचार्यदेव विजय जयंतसूरीश्वरजी म. सा. पू. आचार्यदेव विजय विक्रमसूरीश्वरजी म. सा. पू. आचार्यदेव विजय नवीनसूरीश्वरजी म. सा., तथा

पू आचार्यदेव विजय महाबलसूरीश्वरजी म सा (प्रशिष्य) और शिष्या माध्वी सर्वोदयाश्री आदि निखिल विशाल साधु साध्वी गण की निश्रा में चल रही यह सघयात्रा वर्तमान जगत में जैन धर्म की महानतम यात्रा है।

इस महान यात्रा सिकन्द्राबाद से भांडकजी (भद्रावती) तक आ पहुंची और तब तक भारत में जैन सघो में नया उत्साह पैदा हो गया था। समस्त भारत के ५० से भी अधिक सघ के अधिकृत आगेवान वहाँ उपस्थित थे।

सबका दिल इस सघयात्रा के प्रभाव से प्रभावित हो गया था। सबके दिल में सागर के समान उर्मियाँ उछलती थी। सबका दिल कहता था कि ऐसी सघयात्रा के सिलसिले में जैन धर्म एव सप्त व्यसन के निषेध का जोरशोर से उपदेश किया जाय।

परिणामत उन उत्साह उर्मियों से अनुमोदना समिति का आयोजन हुआ। इस समिति का पूर्ण नाम श्री समेतशिखरजी महातीर्थ सघयात्रा अनमोदना समिति है। लेकिन सुविधा के लिए हम उन्हें अनमोदना समिति ही कहेंगे। क्योकि समिति के सदस्य एव कार्यकरो के सामने यात्रा की आज्ञा गुरु महाराज का वात्सल्य एव शासन का हित है। उनकी दृष्टि विशाल है और गभीर भी।

निवेदन

लब्धिसूरीश्वरजी स्मारक संस्कार केन्द्र की ओर से प्रगटित इस पुस्तिका का क्रमांक आठवाँ है।

गुजराती में इस लघु पुस्तिका की द्वितीय आवृत्ति प्रगट हो चुकी है। उपयोगिता का यह सबूत है।

हमने दूसरे संस्करण में इस पुस्तिका की ५००० प्रतियाँ गुजराती में प्रसिद्ध करवाई हैं।

आज श्री सम्मेत शिखरजी महातीर्थयात्रा अनुमोदना समिति की ओर से इस पुस्तिका की १० हजार प्रतियाँ का प्रसिद्ध करने का शुभ सम्पन्न हुआ है।

हम इस ऐतिहासिक संघयात्रा एवं उनकी अनुमोदना समिति के प्रति सफलता चाहते हैं।

नागपुर निवासी रतिलाल शाह (श्री प्रिंटिंग प्रेस) ने अल्प समय एवं अल्प मूल्य से इस कार्य में योगदान दिया उनके भी हम ऋणी हैं। इस पुस्तक का सिर्फ दो दिन जैसे अल्पावधि में शीघ्रातिशीघ्र

पू. आचार्यदेव विजय भद्रंकरसूरीश्वरजी म. सा. (प्रशिष्य) और शिष्या साध्वी सर्वोदयाश्री आदि निखिल विशाल साधु साध्वी गण की निश्रा में चल रही यह संघयात्रा वर्तमान जगत में जैन धर्म की महानतम यात्रा है।

इस महान यात्रा सिकन्दराबाद से भांडकजी (भद्रावती) तक आ पहुँची और तब तक भारत के जैन संघो में नया उत्साह पैदा हो गया था। समस्त भारत के ५० से भी अधिक संघ के अधिकृत आगवान वहाँ उपस्थित थे।

सबका दिल इस संघयात्रा के प्रभाव से प्रवाहित हो गया था। सबके दिल में सागर के समान उर्मियाँ उछलती थी। सबका दिल कहता था कि ऐसी संघयात्रा के सिलसिले में जैन धर्म एवं सात व्यसन के निषेध का जोरदार से उपदेश किया जाय।

परिणामत – उन उत्साह उर्मियों से अनुमोदना समिति का आयोजन हुआ। इस समिति का पूरा नाम "श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ संघयात्रा अनुमोदना समिति" है। लेकिन सुविधा के लिए हम उसे अनुमोदना समिति ही कहेंगे। क्योंकि समिति के सदस्यों एवं कार्यकरों के सामने शास्त्र की आज्ञा गुरु महाराज का आदेश एवं शासन का हित है। उनकी दृष्टि विशाल है और गंभीर भी।

आज यह विशाल तौर से हमारे जैनेतर भाईओं के लिये पू. मुनिराज राजयशविजयजी म. की अंग्रेजी किताब "जैन धर्म का परिचय" का विद्वान प्राध्यापक डा. शांतिलाल बारसीवाल से किये गये भाषांतर की भेंट करते हैं।

हमें आशा है आप पाठक वर्ग इस किताब से जैन धर्म के बारे में अच्छी जानकारी [illegible] पायेंगे। और निष्पक्षपात दृष्टि से अध्ययन करके हमारे प्रयत्न को सफल कर इस महान जैन संघयात्रा की स्मृति को आपकी आत्मा में चिरस्थायी बनायें।

अनुमोदना समिति
प्रधानसेवक (Secretary)
राजेन्द्र दलाल





"सफेद है वह दूध ही होता है या पीला है वह सोना ही होता है' तो इस दुनिया में कोई विवाद ही खड़ा न होता।

परन्तु दुनिया में असली से नकली ही अधिक होने से हमेशा इस जीवन व्यवहारों में सावधानी बरतनी पड़ती है।

डिब्बे पर मेड इन यू एस ए लिखा हुआ होता है वह Ulhasnagar Sindhi Association इस नाम की गली में लगी हुई फॅक्टरी में बना हुआ होता है।

मनुष्य में भी कहाँ इसका अभाव है? बेटा तोतली बोली बोलता है तो वह प्रिय लगता है पर जब वह जवान होकर अपनी पत्नी का गुलाम बन जाता है तो महसूस होता है कि वह नकली ही है।

बड़ी खुशी से घोड़े पर बैठकर ब्याह के आनंद में युवक मगन-मस्त रहता है पर जब चार दिन में ही तलाक लेने को उतारू हो जाता है तो वह क्या नकली युगल नहीं है।

इस प्रकार नकलीपन हर क्षेत्रों में दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। हम कहते हैं कि भाई नकली है इसलिए दुनिया में असली की महत्ता एवं मौलिकता है। चाहे कुछ भी कहा पर दुनिया में नकली का बोलबाला रहने वाला ही है हाँ यह अवसर रहेगा भी! अतः आदमी को असली चीज पाने के लिए उसकी ठीक परख करना आवश्यक हो जाता है।

धर्म के विषय में भी यह सच है। उसमें भी सच के स्थान पर झूठ तथा असली के स्थान पर नकली की महत्ता बढ़ चुकी है इसलिए यहाँ भी असली नकली की परीक्षा अनिवार्य ही है।

धर्म का प्रधान अंग है 'भगवान।' भाई! जिनको भगवान कहने में औचित्य रखना है उनके लिए यह विचारणीय बात है कि भगवान किसे कहें? अगर हम भगवान को पुकारेंगे तो भगवान फौरन ही साक्षात् होकर प्रकट हो सकेंगे?

किसी भी धर्म के भगवान आज विद्यमान नहीं है इसलिए हमें सब धर्मग्रन्थों का अवलोकन करके यह निर्णय करना होगा कि आखिर भगवान का सच्चा प्रतिरूप या स्वरूप क्या है

इसका निर्णय एक महापुरुष ने इस प्रकार किया है— आज किसी भी धर्म का कोई भी भगवान हमारे बीच उपस्थित नहीं है

पर हमें सब धम पुस्तकों को पन कर वास्तविक भगवान कहलाने लायक कौन है इसका निणय करना होगा ।

यह तो मानना ही पडेगा जो जसा होगा उसका वसा ही चित्रण उनके धमग्रन्थो में किया गया होगा ।

सच है साहित्य दपण है । दपण के आगे जो जसा है वसा ही दिखाई देगा । काला आदमी उजला नही दिखेगा और न उजला काला ।

भगवान का वणन पढकर हमें इस निणय पर आना होगा कि जो राग द्वेष से–अहकार, ममत्व से, तेर मेरे स, भले बुरे से, 'पर' रहा है वही सच्चा भगवान कहलाता है ।

हम जब किसी को पापी अधर्मी नीच अधम कहते हैं तो यह सब उसकी आत्मा में रहे हुए राग द्वेष क कारण से ही न !

बात बात में क्रुद्ध होने वाला दुनिया में अपने ही को सब कुछ मानने वाला स्वाथपूर्ति के लिए भले बुरे क विवेक से भ्रष्ट को पापी का ही सज्ञा दी जा सकती है और यह दशा राग द्वेष एव अज्ञान जहा होता है वहा ही देखन में आता है ।

'राग' यान मेरापन ! यह स्त्री मेरी यह धन मेरा यह कुटुम्ब मेरा यह शरीर मेरा यह भगत मेरा यह खास सबध मेरा; आदि सब, 'राग' के ही तरीके हैं । यह लाभ ही है ।

इस राग में ही सब पापों का उद्भव है ना ? मैं ही सब कुछ हूं । मैं ही पूजनीय हूँ इसलिए सबने मुझे पूजना चाहिए । पब्लीसिटी पर महात्मा कोई भी नहीं है । मेरे इस अहं में जो बाधक होगा उसको मैं मौत के घाट उतारूंगा । नाश देकर पल में खाक बना दूंगा । यह सब द्वेष का ही रूप है ।

इस प्रकार का राग द्वेष जब तक विद्यमान है तब तक सच्चा ज्ञान हमसे दूर रहता है तो फिर सम्पूर्ण दुनियां का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त हो सकेगा ?

अहंकार और ममत्व तो अज्ञानियों में ही रह सकता है । इस अज्ञान में ही तो जगत दुःखी है । क्या हमारी ही मोटर हमारा नाश करेगी ? क्या अपनी ही पत्नी अपना गला घोट देगी । हर रोज दो टाईम नहीं पर बार-बार स्नान का मानने वाला अपने सुन्दर तन्दुरस्त शरीर ही कब व्याधियों से जर्जर हो जायगा इसका भी हमें ज्ञान नहीं है । यह कैसा घोर अज्ञान !

जिनका चरित्र पढ़कर हमें प्रतीति हो कि यहां अज्ञान का एक अंश भी उपस्थित नहीं है राग द्वेष का अंश भी विद्यमान नहीं है ऐसा समझ लेना कि हमारी सबकी आत्मा से वे आत्मा उच्च एवं भिन्न आत्मा है जिसे हम परम-आत्मा यानि परमात्मा कहते हैं ।

यह परमात्मा जो बड़ी ऊँची आत्मा होती है, वह परमात्मा एवं भगवान कहलाती है।

इन परमात्माओं का चरित्र ऐसा प्रभाव पूर्ण होता है कि जिसे पढ़कर तथा सुनकर मानव परम शान्ति का अनुभव करता है, वैर विरोध का ज़हर नष्ट होकर प्राणि मात्र को अपना परम मित्र मानने लगता है।

कारण ?

इन परमात्माओं का जीवन तप, त्याग, करुणा और दया से ऐसा भरा पूरा होता है कि जगत उस पर न्योछावर हो जाता है।

फिर यह समभाव में मस्त आत्मा (परमात्मा) प्रशंसा से तुष्ट या निंदा से रुष्ट कैसे बन सकती है ?

किसी को मानव से पशु या पशु से मानव बनानेवाला भी भगवान कहलाने योग्य नहीं हो सकता।

भगवान तो निंदक तथा पूजक, कष्टदाता या सेवाकर्ता दोनों पर समभाव रखता है। वह न तो पूजक पर खुश होता है न निंदक पर रुष्ट। फिर वह किसी को श्राप देकर क्यों कर जलायेगा ? या मौत के घाट क्या कर उतारेगा ?

इस प्रकार से भगवान के लिए किसी को मारने की आवश्यकता ही उत्पन्न नहीं होती। क्योंकि उनमें रागद्वेष, अज्ञानादि

दोषों का सम्पूर्ण अभाव होता है। इस प्रकार के दोष रूपी शत्रुओं को जिन्होंने मार लिया है वे भगवान अरिहंत कहलाते हैं। अरि-रागद्वेष अज्ञानादि शत्रुओं का नाश किया है व अरिहंत हो भगवान कहलाते हैं।

रागद्वेष अज्ञान आदि सबका सम्पूर्ण नाश कर वे विजेता बनते हैं इसलिए उन्हें हम 'जिन' या 'जिनेश्वर' भी कहते हैं।

ऐसे सब तीर्थंकर और जिनेश्वरों के नाम एवं जीवन घटनाओं में भिन्नता हो सकती है पर तप त्याग शक्ति से रागद्वेष तथा अज्ञान आदि पर विजय पाने में सब समान ही होते हैं।

ऐसे परमात्माओं ने न किसी को कभी शाप दिया है न किसी को भक्ति से प्रसन्न होकर कोई वरदान।

ये परमात्मा तो आत्मा से परमात्मा कैसे बना जा सकता है इसकी रूपरेखा बनाते हैं। उस मार्ग के प्ररूपक एवं स्थापक बनते हैं।

ऐसे भगवान जहाँ जहाँ विचरते हैं वहाँ वहाँ अपने प्रभाव से सुख शान्ति ही प्रदान करते हैं।

उनके आगे सिंह जैसे हिंस्र प्राणी अपनी क्रूरता भूल जाते हैं और गाय जैसा डरपोक प्राणी भी निर्भय बन जाता है। इस प्रकार उनके विविध अद्भुत प्रभाव से दुनिया प्रभावित होती है।

ऐसे अरिहंत जब साक्षात् विचरते होंगे तब क्या होता होगा यह तो उनकी साक्षात् उपस्थिति से ही हम समझ पा सकते हैं।

पर उनका जीवन कितना ऊँचा होगा यह तो उनकी मूर्ति भी कह देती है।

क्या आपने कभी अरिहंत भगवान की मूर्ति को गौर से देखा है ? जैन मन्दिरों में वे विराजमान होती हैं अवश्यमेव उनका दर्शन कीजिए।

इस मूर्ति को गौर से देखने पर आपको ज्ञात होगा कि भगवान परमात्मा का कितना विलक्षण स्वरूप होता है।

कारण ?

उस परमात्मा के हाथों पैरों में शस्त्र नहीं दिखेगा। शस्त्र धारक भगवान कैसे कहला पायेंगे? शस्त्र तो शत्रु के डर से धारण किया जाता है। या जो किसी से डरता हो तथा जिसका कोई शत्रु विद्यमान हो उसे धारण करना पड़े।

परमात्मा तो शस्त्र हाथ में ग्रहण भी नहीं करते हैं। सच कहो शस्त्र देखकर मन में कैसी भावना उत्पन्न होती है ?

दूसरी विशेषता है पद्मासन का। अरिहंत की मूर्ति पद्मासन में ही विराजमान रहती है। उनके नीचे हाथी घोड़ा मूषक या बैल जैसा कोई वाहन नहीं होता है।

वाहन तो मुसाफरी के लिए आवश्यक है। परमात्मा को इसकी कोई आवश्यकता नहीं होती। वे तो मोक्ष में पहुंच चुके। अब उन्हें सवारी किस लिए?

परमात्मा को किसी पर बैठने का नहीं होता वह तो यहां अपने उपदेशों का मार्गदर्शन करके मोक्षपुरी पहुंचाना चाहते हैं।

जिस प्रकार परमात्मा भगवान के हाथ में शस्त्र नहीं होता उसी प्रकार जपमाला भी नहीं होती। कारण जप तो मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। भगवान तो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं। वे पूज्य बन चुके हैं और उनके लिए कोई अन्य पूजनीय नहीं रहा है। जिनका मोक्ष पाना शेष हो वे भगवान कैसे कहलाए जायेंगे?

परमात्मा की मूर्ति के साथ स्त्री की मूर्ति रह ही नहीं सकती।

क्या परमात्मा की भी पत्नी होती है?

अगर भगवान की पत्नी होती तो वे वीतरागी नहीं अपितु अपनी ही पत्नी के भगवान होते? नहीं नहीं। वे तो जगत मात्र के

प्राणियों के हितकर्ता एवं तीनों जगत के भगवान है इसलिए उनकी मूर्ति के साथ स्त्री हो ही नहीं सकती।

इसके उपरान्त अरिहंत की मूर्ति आंखें, कान नाक तथा मुखाकृति के दर्शन परम आनंद दायक होते है।

कारण ?

जिनेश्वर के नेत्रों में किसी के प्रति क्रोध का अंश भी नहीं होता।

उनकी मूर्ति के दर्शन पाते ही हमारे हृदय में प्रतीति होती है कि ये आत्मा नहीं।

पर परमात्मा या भगवान है।

ऐसे अरिहंत तीर्थकर जिनेश्वर देव केवल जैनों के ही 'देवता' जैनों के ही भगवान है यह मानना गलत है। पर ये वीतरागी देव उन्हीं के भगवान है जिन्हें इस प्रकार के राग द्वेष से रहित वीतरागी भगवान ही पूजनीय लगते है।। जिसे इस प्रकार के वीतरागी भगवान ही श्रद्धेय हैं वे ही सच्चे जैन हैं।

"जैन शब्द का अर्थ है, जिनके अनुयायी। 'जिन' में राग द्वेष रहित वीतराग में ही श्रद्धा तथा विश्वास रखनेवाला ही सच्चा जैन है।

इसी महत्ता के कारण लाखों एवं करोड़ों अजैन पुण्यात्मा महानुभावों ने जैन धर्म की शरण ली। वीतराग जिनेश्वर देव को अपने सच्चे देव मानकर उनके चरणों में स्वयं को समर्पित किया। किन्तु इतना ही नहीं उनका गुण संकीर्तन किया है अपितु अन्य धर्म पुस्तकों में भी योग वासिष्ठ वैदिक धर्म का सभी का समान आदरणीय ग्रन्थ है। उसके स्वाभिमान में भी सुन्दर एवं पक्षपात रहित बात कही है —

"नाहं रामो न मे वांछा विषयेषु न च मे मनः ।
शान्तिमास्थातुमिच्छामि स्वात्मन्येव जिनो यथा ॥"

मैं राम नहीं हूँ। न तो विषयों में मेरा मन है न मेरी इच्छा शेष है। पर मैं 'जिन' जैन देव के समान आत्मा में शान्ति पाने की इच्छा करता हूँ।

जिनेश्वर यानि परमशान्त आत्म तत्व इसलिए उस पाने की अभिलाषा ही सच्ची इच्छा है।

पुराणों एवं वेदों में भी जैन तीर्थंकरों को सम्बोधन कर रचे हुए मंत्र उपलब्ध है। और इससे आगे बढ़कर यह बात भी है कि भगवान ऋषभ देव जो जैनों के प्रथम तीर्थंकर है उन्हें मोक्ष मार्ग के प्रस्थापक भी कहा है। श्रीमद् भागवत में तो उन्हें भगवान

विष्णु के अवतार के रूप में आदरणीय माना है और वह भी कितनी सुंदर भाषा में ?—

हमेशा विषय भोग की अभिलाषा से अपने वास्तविक कल्याण से वंचित आत्माओं का करुणापूर्ण हृदय से निर्भय तथा आत्मकल्याणकारी उपदेश देकर हमेशा आत्मानुभव हो ऐसी आत्मस्वरूप की प्राप्ति में सर्व इच्छाओं से मुक्त बने हुए भगवान ऋषभदेव को नमस्कार हो। (अध्याय १८, श्लोक १)

यह ऋषभदेव का वर्णन तीर्थंकरों की महानता एवं सत्य स्वरूप का प्रकट करने में समर्थ है।

राजर्षि भर्तृहरि के वैराग्य से भारत में कौन बेखबर है ? उसने भी सच्चे साध्य के रूप में भगवान जिनेश्वर देवों की ही स्तुति की है।

एको रागिषु राजते प्रियतमादेहार्धधारी हरो
नीरागेषु जिनो विमुक्त ललना सगो न यस्मात् परः ।
दुर्वार स्मरबाणपन्नगविषव्यासक्तमुग्धो जनः ।
शेषकामविडंबितो हि विषयान भोक्तु न मोक्तु क्षमः ।।

"एक ओर रागिओ प्रियतमा के अर्धांग से विभूषित हर है और दूसरी ओर विरागीओ में स्त्री के संग से पर जिनदेव शोभते

घरबार छोड़कर निकले हुए सच्चे साधु कभी अपने मठ, मंदिर मस्जिद या स्थान नहीं बनवाते।

सबके द्वार उनके लिए खुले हुए होते हैं।

इसी लिए जैन साधु के लिए सबसे पहली बात है कि—

वह राजा हो या महाराजा

पर

उसको घर बार तथा स्वजनों को छोड़कर हो आना चाहिए।

धनिक हो या गरीब उन्हें नियत किये हुए श्वेत वस्त्रों को ही धारण करना चाहिए।

वह वेश ही ऐसा है कि जिसमें से शायता के स्पन्दन हो हो जाते हैं।

युद्ध के मैदान पर—संधि का ध्वज सफेद ही होता है ना?

इन साधुओं के वेश में ऐसी सौम्यता है कि जिसे देखकर किसी के मन में लोभ ईर्ष्या या लूट की भावना ही जागृत न हो सके।

क्या साधु के पास आभूषण है?

मूल्यवान रंग बिरंगे वस्त्र हैं?

साधु के लिए इत्र तेल या फूल है?

नहीं।

साधु के लिए उसके गुण ही शृंगार हैं, मीठी मधुर वाणी ही उसका भूषण है। अपने उच्च चारित्र-नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की सुवास ही उसके लिए तेल एवं इत्र है।

अगर साधु भी वस्त्र आभूषणों तथा प्रसाधनों के पीछे पड़े रहे तो दुनिया को सादगी का पाठ कैसे पढ़ा सकेंगे।

अगर वह अपने शरीर के साज शृंगार में पड़े रहे तो दुनिया के प्राणी मात्र की सेवा टहल का पाठ कैसे पढ़ा सकेंगे ?

प्राणी मात्र के आत्मगुणों का विकास कैसे कर सकेंगे ?

इसीलिये साधु का वेश सादगी से परिपूर्ण होता है।

वह वस्त्र सिर्फ लज्जारक्षण के हेतु ही होता है।

वस्त्र शरीर की शोभा वृद्धि के लिए नहीं अपितु शरीर की रक्षा के हेतु धारण किया जाता है।

रंग बिरंगे कीमती वस्त्र पहनता है वह साधु, अत साधु नहीं कहला सकेगा।

जिसे अपना घर बार छोड़ना है

लाखों की जायदाद तजनी है

उसके लिये पैसा भी अस्पृश्य वस्तु है

उसका स्पर्श भी साधु के लिए हेय है।

तीस उपवास भी करे। और ६० उपवास भी, महीनों तक ही नहीं बरसों तक रूखा सूखा खाय। निर्दोष तक के अमुक वस्तु से अधिक वस्तु नहीं खाने की प्रतिज्ञा करे।

भारत के इस ओर से उस ओर तक यानि एक किनारे से दूसरे किनारे तक १०० २०० मील के फासले में कोई न कोई जैन साधु आपको मिलेगा ही। जैन साधु जब भी कहीं जाते हैं मतलब विहार करते है तो पदल ही यात्रा करते हैं।

वह भी नंगे पैर सुबह हो या शाम

सर्दी हो या गर्मी, कांटे हों या कंकर,
वह नंगे पैर ही विचरता है।

क्या अपनी चमड़ी कुछ कम है जो उसपर पशु की चमड़ी का खोल चढ़ाया जाये ?

कैसा गजब का स्वतंत्र जीवन है यह !

बीमार हो तो कहीं रुक जाय। कुछ कम चले—आहिस्ता भले चले पर चलता ही रहे।

इस प्रकार का कष्ट नहीं तो साधुता क्या ?

शरीर तो पंच भूतों का पुतला है उसकी सार सम्भाल से तो छोटे बड़े सब जीवों की रक्षा ही बेहतर।

नगे पैर वह इसलिए चलता है कि छोटा जीव भी उसके पैरों के नीचे न रौंदा जाय।

काया कसी जाय इस प्रकार साधु हर रोज कायोत्सर्ग में स्थिर रहता है चाहे शरीर थक भी क्यों न जाए ? उसकी प्रतिक्रमणादि की क्रिया भी खड़े होकर ही की जाती है।

और

शेष समय धर्मोपदेश या शास्त्रपठन में व्यतीत हो जाता है। साधु को व्यर्थ की बातों में गंवाने के लिए समय कहां है ?

अगर वह व्यर्थ बातों में समय व्यतीत करे तो अपना घर छोड़कर भी अनेक घर बनाने वाला ही बनेगा।

इस दुनिया की भौतिक और विलासी वस्तुओं से दूर रहने के नियम के कारण ही जैन साधु हजारों वर्षों से विरासत में प्राप्त ज्ञान की आजतक रक्षा कर सका है। उसकी वृद्धि कर सका है। उसका विस्तार कर सका है।

जैन साधु की सम्पत्ति है, उसका ज्ञान। आत्मा को लाभ पहुँचाने वाले ज्ञान का एक अक्षर पाने के लिए साधु लालायित हो उठता है। जमीन जोते बिना फसल देने योग्य नहीं बनती फिर देह कसे बिना ज्ञान कैसे प्राप्त होगा ? इसीलिए साधु दाढ़ी

मुछ और सिर के बालों को हाथसे उखाडते है। हर रोज दाढ़ी मूंछ बनाने में उसको रस कहाँ और समय भी कहाँ है?

साधु का–सच्चे साधु का रास्ता ही निराला है। उसे न हजाम की आवश्यकता है न पैसे की, चार छह मास होने पर वह हाथों से बालों को खींचकर नष्ट कर देता है। यह क्रिया तो सलून में आपका नंबर लगे उससे पहले ही पूर्ण हो जाती है।

मन का दुर्बल साधु कहता है यह तो जुल्म है सबल साधु कहता है कि यह तो साधुता की मौज है।

शरीर को कष्ट न दे तो वह सेठ ही बन जायेगा न।

वर्ष में दो चार बार इस प्रकार हाथ चलाने से शरीर समझता है कि उसके अन्दर आत्मा जागृत है अगर ठीक तरह से काम नहीं किया तो खाना पीना देनाही वह बन्द कर देगी।

राजा को जीतने के लिये राजमहल पर कब्जा करना पड़ता है और देश राजमहल के लिये जीतना पड़ता है।

आत्मा ही राजा है।

मन उसका राजमहल है।

और शरीर उसका देश [redacted]।

ऐसे कितने ही नियमों से शोभने वाला साधु है। वह किसी का बोझ नहीं बनता, पर अनेकों का बोझ हल्का कर देता है।

अपना और अन्यों का आत्मकल्याण करे वह साधु

ऐसे गुरु की प्राप्ति हमें अंधकार से प्रकाश में ले जाए तो आश्चर्य क्या ?

नहीं तो

घोर अंधेरे में हम भटकते ही रहे होते !

शरीर नहीं जाना जाता तब तक मन पर विजय नहीं प्राप्त होती परमात्म दशा नहीं प्राप्त होती।

इस प्रकार मन वचन, काया की साधना है वह साधु। मेरे तेरे का भेद नष्ट कर दे वह साधु।

ऐसे सच्चे साधु की हर प्रवृत्ति से अहिंसा एवं करुणा टपकती ही रहती है।

उसकी हर बात में प्राणी मात्र की प्रीति एवं हित की भावना की चमक है।

सत्य बोलने का तो हमेशा का नियम। साधु को बिना पूछे तिनका भी ग्रहणीय नहीं है। मालिक की आज्ञा के बिना वह ले नहीं सकता चाहे वह दांत साफ करने की सींक हो। या जीवन-मरण के समय भी पानी की अन्तिम घूंट हो।

साधु तो ब्रह्मचर्य का पालक ही हो।

ब्रह्म याने आत्मा-सत्य-आत्मा-परमात्मा ही है। उससे ही उसका प्रेम होता है। फिर उनको पत्नी कैसे वर्जित हो? मन-वचन-काया से वह विलास को तजता है स्त्री के स्पर्श से भी वह कोसों दूर रहता है।

ऐसे कितने ही नियमों से दीपने वाला साधु है। वह किसी का बोझ नहीं बनता पर अनेकों का बोझ हल्का कर देता है।

अपना और अन्यों का आत्मकल्याण करे वही साधु

ऐसे गुरु की प्राप्ति हमें अंधकार से प्रकाश में ले जाए तो आश्चर्य क्या?

नहीं तो

घोर अंधेरे में हम भटकते ही रह होते।

धर्म के इतिहास में ऐसी अनेक बातों की लाश है। अमुक धर्म के शत्रु पापी हैं इसलिए उनकी हत्या करो, धर्म होगा।

इतिहास में यह धर्मांधता कहलाती है। पर इस मूर्खतापूर्ण लड़ाई को धर्मांधता नहीं अपितु मूर्खांधता या मोहांधता कहनी चाहिये।

इसे धर्मांधता कहने से धर्म का मूल्य घटता है पर मोहांधता कहने से अहिंसा का मूल्य बढ़ता है। सच्चा धर्म इस हिंसा को कभी बरदाश्त नहीं करेगा। धर्म किसी से कराने से नहीं होता। धर्म तो पवित्र एवं आत्मा से स्वयं स्फुरने से ही होता है।

श्रेणिक महाराजा के समय में कालसौकरिक कसाई था। वह रोज ५०० भैंसों की हत्या करता था। राजाने इस हिंसा को बंद करने का संकल्प किया। कालसौकरिक को उसने कूए में रखा। कालसौकरिक ने मिट्टी के ५०० भैंसे बनाये और उनकी हत्याका आनंद लिया और राजा श्रेणिक ने हिंसा बंद करने का आनंद तो लिया।

पर उन्होंने अन्त में देखा कि हिंसा हृदय में छुपी हुई रह गई है। उसे नष्ट करने के लिये दम्भ की नहीं पापी के तिरस्कार की नहीं पाप के तिरस्कार की तथा पापी के प्रति करुणा की आवश्यकता होती है।

अन्य के कराने से धर्म कभी नहीं होता। वह तो अपने स्वयं के करने से होता है। इसलिए धर्म के नाम पर अन्य धर्म के—अपने से विरुद्ध धर्म के लोगों के लिए धिक्कार की एवं तिरस्कार की भावना पैदा कराये या उनकी हत्या करने को जो कहे वह 'धर्म' ही नहीं है। सच्चा धर्म तो सब प्राणियों के लिए [illegible]

दया, [illegible]

[illegible] करुणा, [illegible]

[illegible] उदारता सिखाता है [illegible]

इसलिए धर्म का प्रथम लक्षण अहिंसा है। सब लोगों को जीने का एक हक है, बलवानों को जीने का हक है, और निर्बलों को जीने का अधिकार ही नहीं है यह मान्यता ही सब से बड़ा अधर्म है।

क्या मानव सब से अन्य सब से शक्तिमान है इसलिये उसको सब को मारने का अधिकार है? नहीं इसीलिए सब को बचाने का ही उसका कर्तव्य है। सब को बचाने में ही उसके शक्ति की कसौटी है। [illegible]

एक चिंतक ने कहा है— [illegible]

'हिंसा यदि धर्मः स्यात् अधर्मः तदा को भवेत्?'

अगर शक्तिशाली या निर्बल किसी भी प्राणी की हिंसा को धर्म कहा जाय तो अधर्म किसे कहेंगे? [illegible]

ब्रह्मचर्यपालन, सदाचार परस्त्री के लिए माता के समान भाव।

परधन-संपत्ति को मिट्टी के समान।

आत्मा के सिवा दुनिया में कोई भी चीज अपनी नहीं है इस प्रतीती की बुद्धि करनेवाला निष्परिग्रहव्रत—ये सब अहिंसा के ही उपांग हैं।

क्रोध मान माया लोभ भी हिंसा है। उससे अन्य किसी की हिंसा न भी होती हो फिर भी स्वयं की — आत्मा की हिंसा तो होती ही है।

अपनी आत्मा की हिंसा यानि आत्मा और परमात्मा के बीच लोहे की भीत का निर्माण है।

इसलिए क्रोध, मान माया लोभ आदि अधर्म हैं पाप हैं इस प्रकार समझानेवाला अहिंसामूलक धर्म ही सत्यधर्म हो सकेगा।

यह सत्यधर्म की प्ररूपणा उपदेश क्रोधी मानी मायावी या लोभी नहीं कर सकेंगे।

इसलिए वीतक्रोधी वीतमानी वीतमायी और वीतलोभी अर्थात् वीतराग जिनेश्वर देव ही सत्यधर्म बता सकते हैं।

इस प्रकार के किसी भी वीतरागी ने किसी भी स्थान पर, किसी भी काल में कथन किया हुआ धर्म ही सत्यधर्म है।



स्याद्वाद-अनेकांत

सच्चे एवं महान धर्म की परीक्षा अनुयायियों की महत्ता के बल पर नहीं अपितु उसके चिंतन एवं विचार बल पर तथा उदारता पर निर्भर है।

विचार की उदारता में जैनधर्म विश्व में सबसे अधिक मशहूर है।

गुजरात के आनंदशंकर[1] ध्रुवजी से लेकर बुद्ध रामानुज[2] सम्प्रदाय के गुरुओं तक सबने जैनों के स्याद्वाद की प्रशंसा की है। गांधीजी एवं बर्नार्ड शॉ[3] जैसे विचक्षण विचारक भी इस पर मुग्ध

---

१ स्याद्वाद हमारे सामने समन्वय की दृष्टि खड़ी करता है।

२ स्याद्वाद जैनधर्म का अजेय किल्ला है। वादी प्रतिवादी के मायामय गोले इसमें प्रविष्ट नहीं हो सकते।

३ जैनधर्म के सिद्धान्त मुझे अतिप्रिय हैं। अगर पुनर्जन्म सत्य हो तो मैं चाहता हूँ कि मृत्यु के बाद मेरा जन्म जैन कुटुम्ब में हो।

वन है। टागोर और राजेन्द्रबाबु जैसे श्रेष्ठ पुरुषों ने विश्वशांति के लिए जैन धर्म की वैचारिक उदारता को श्रेष्ठ कहा है।

इसी विचार उदारता का नाम है अनेकांतवाद – नयवाद – अपेक्षावाद।

अनेकांतवाद के तात्त्विक विचारों की महत्ता का विचार छोड़कर हम सोचें की यह उसके पालन पर कैसा असर करता है जिससे अनेकांतवाद का स्वरूप स्पष्ट होगा।

बहुत से धर्म के लोगों की मान्यता है कि 'भक्ति से ही आत्मा का कल्याण होता है' अन्य लोगों की श्रद्धा है कि समाज सेवा में ही धर्म है। कुछ लोग कहते हैं कि तप से ही मोक्ष है।

तब जैनधर्म का कथन है कि इसमें से कोई भी मत एक धर्म नहीं है इतना ही है। कि वे परस्पर की बात मानें।

पर भक्तिवादी कहे कि सेवा से धर्म नहीं होगा तप तो अधर्म ही है।

तप का समर्थक कहता है कि नहीं सेवा में क्या रहता ▌ तप ही सच्चा धर्म कहा जाता है। ऐसा कहें तो तीनों ही गलत होंगे।

अनेकांतवाद कहता नहीं भाई तप भी धर्म है और सेवा भी धर्म है। मनुष्य की सेवा भी धर्म है और भक्ति भी धर्म है।

और ॰ और

जना के जीवन में हम इस तत्वज्ञान की झांकी पाते हैं ।

पयूषण के दिनों में हम देख पाते हैं कि एक ओर वे तप करते है । वह तप भी कैसा ? छोटा बालक भी उपवास करता है । २४ घंटे कुछ खाना पीना नहीं है । ऐसा नहीं कि उपवास करे और फलाहार करे । उपवास यानि उपवास । ऐसा भी नहीं कि सुबह न खायें और रातको खायें ।

इस प्रकार एक ओर यह तप को धर्म समझता है तो साथ ही साथ अपने हाथ से दान पुण्य भी करता है । गरीबों अनाथों का अन्नदान भी करता है । गौशालाओं का भी पोषण करता है । यह जीता जागता मूर्तिमान अनेकांतवाद नहीं तो और क्या है ?

तप माने खानपान त्याग धर्म है पर साथ ही भूखों-पीड़ीतों का खानपान देना उनकी सेवा टहल करना भी धर्म है । नहीं तो जो पाप से बचने के लिए धर्म के नामसे खाता नहीं वह जब दूसरों को खिलाता है तो विरोध सा लगता है न ?

पर नहीं विचार की उदारता जिसके पास है वह समझ पाता है कि तप भी धर्म है दूसरों को खिलाना भी धर्म है ।

जैनियो के तपत्याग से प्रभावित अनेक दग नाओ ने कहा है कि – अगर अनाज की कमी दूर करनी हो तो जनधम का पालन करो। उनका तप यान तप।

पर

अपनी काया को कष्ट देना इसका अथ यह नही कि दूसरो को कष्ट देने में पाप नहो ह। खुद तो ३०–४०–५० दिन तक उपवास करना है पर अन्य किसी जीव को जरा भी दुःख न पहुँचे इसके लिए सावधानी बरतता है।

उसी प्रकार जन ज्ञान भडार के ग्रथो के लिए एस अत्याचार हुअे हैं कि ग्रन्थों को जलाकर उत्पन्न की हुई आगपर हजार सैनिकों का गरम स्नान जल छ छ मास तक उबलता रहा ह फिर भी अनोखे श्रम से जिस ममता से जन ज्ञान भडारो में स धर्मों के पुस्तको की रक्षा हुई ह यही जनिया क स्याद्वाद का जाग जागता दृष्टान्त है।

' जितना ही जनेतर साहित्य विपुल जन भडारो में ह रक्षित रहा था। (वे चा शास्त्री)

जन धर्मो छोटा बाल्क भी अगर अपने कुछ क सस्कार युक्त हो तो अन्य पुस्तको के उपर तो क्या पर कोरे कागज प ना पर रखते हिचकिचायगा। यह तो उसे ज्ञान का अशातन

महुगा । इस भाव के प्रति श्रद्धा के कारण ही जैन धम ग्रथो में अन्य धम के मत कितने अशो में और किस प्रकार सत्य है इसका विस्तत वणन उपलब्ध होताही ।

जन भडार में कुरान, त्रिपिटिक, बायबल वेद और पुराण जैन आगमो के समान ही हिफाजत से रक्षित देखेंगे । इतना ही नहीं बल्कि यह भी दीखेगा कि जन धम के खडन करनेवाले ग्रथो की भी रक्षा की गई है जिन्ह उस ग्रथको पूज्य माननेवाले अनुयायी भी न बचा[१] सके । इस स्याद्वाद के कारण ही जैन तत्वखडन करनेवाले ग्रथो की जनाचार्याने निष्पक्ष और प्रामाणिक टीकाएँ रची है । इतना ही नहीं पर महाभारत और पुराण ग्रथो के पाठ सदभ के रूप में उचित स्थान पर आधार के रूप में रखे है ।

इसका यह कारण है कि जैनशास्त्र किसी वस्तुको एक ही प्रकार की है ऐसा नही मानता एकात आग्रह को यह मिथ्या समझता है। वस्तु इस अपेक्षा से एसी है और अन्य अपेक्षा से ऐसी भी है । इस प्रकार का स्याद्वाद ही सच है । जैनो के नदीसूत्र में एक एसी उदारतापूण बात कही गई है जो अन्य शास्त्रो में कहीं प्राप्त नही होती है । उसमें कहा [illegible] कि

---

१ बुद्ध धम का तत्वसग्रह ग्रथ भारत भर में नष्ट हो गया था पर उसकी एक कापी जैन ज्ञानभडार में उपलब्ध हुई है ।]।

'महाभारत पुराणादि अन्य सब धर्मशास्त्र जो उचित ढंग से पढ़े तथा सही अपेक्षा समझे तो वे झूठ एवं मिथ्या नहीं है। उसके विपरीत अगर जैनागम ग्रन्थों को उचित रूप में समझे न गए तो वे भी मिथ्याश्रुत बनते हैं।

निष्कर्ष के रूप में हम कहेंगे कि जैन धर्म में यह बतलाया गया है कि

दुनिया में कोई भी बात झूठी नहीं है। सबको समझने की सच्ची दृष्टि होनी चाहिए वह झूठी न हो। दृष्टि ही अगर झूठी हो तो सृष्टि की कोई भी चीज सच्ची नहीं है।

जैनों के मन्दिरों पर तथा जैन धर्मानुयायियों पर कलेजा कंपा देने वाले भीषण अत्याचार हुए हैं। धर्मपरिवर्तन न करने के बहाने दो-दो हजार मुनि काट दिये गये हैं। फिर भी जैनों ने कभी किसी मूर्ति-मन्दिर या मस्जिद नहीं तोड़ा है इतना ही नहीं पर धर्म के प्रत्येक क्षेत्र में दान की गंगा बहाता रहा है।

जब वीर जगडूशाह ने बनवायी हुई मस्जिद समझाती है कि अपने धर्म की महानता औरों पर आक्रमण करने में नहीं पर अपने समर्पण तथा बतायी हुई उदारता से ही दिग्दर्शित होती है।

'जैनधर्म आत्मसमर्पण इच्छता है आक्रमण नहीं कभी नकली चीज को नकलीपन की प्रतीति के लिए भी उसकी प्रतिष्ठा करनी

पन्ता है। वर स वैर नहा उपनाव होना पर वर की अग्नि प्रम व जन्र स नुनाती है।

यहा है अनकानवाद और यही है सन्ची मानसिक अहिसा। 'पापी और पाप ाना ज़िकुन भिन्न है। पापी और पाप दाना एक ही है।

य दानो परस्पर विराधी बाते विना स्याद्वाद क समन्व में नहा आ सकती। जब काई पापी सामन आता है तब देखना चाहिए पापी और पाप भिन्न है इसलिए पापी का मारन से क्या? पर जब हमसे कोई पाप का आचरण हाना है तब साचना कि मैं और पाप भिन्न नहा– एक ही है। इसलिए जितना मैं सहूगा उतन मरा पाप का बोझ घटगा। वहा यह आपद्रूसी नही चनेगी कि म क्या करू? म (आत्मा) और पाप भिन्न है। कम पाप कराते ह इसलिए मुनसे भूल हानी है। यह कहना स्याद्वाद नही उसकी विडबना मात्र है।

इसा कारण जन मुनियो ने भारतभर में मुसलमानो स लेकर हिन्दु ब्राह्मण और जैन राजाओ का उपदश दिया है। व उनक चरणो क सवक बन फिर भी कभी जबरदस्ती स उन्हे जैन बनान का या जा विरोधी समनकर उसपर जुल्म ढान की शिक्षा नहा दी ह।

सच्ची अहिंसा के बिना सच्चा धर्म नहीं मिलता

और

जहाँ अनेकांतवाद हो वहीं सच्चा धर्म होता है। आचार्य हेमचंद्राचार्य आचार्य हीरविजयसूरि आदि महाराजाओं ने राजाओं द्वारा अहिंसा का प्रचार करवाया पर किसी मस्जिद या मंदिर तोड़ने के लिए प्रोत्साहन देने का कार्य जैन साधन कभी नहीं किया। जैन धर्म की नीति रचनात्मक एवं मंडनात्मक ही रही है।

जैन धर्म की कुछ मान्यताओं की अन्य धर्म की मान्यताओं के साथ तुलना करने से जैन धर्म की उदारता का स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा।

ये है उसकी उदारता के चंद नमूने

(१) किसी भी आत्मामें मोक्ष की तीव्र अभिलाषा उत्पन्न होने पर वह एक दिन अवश्यमेव मोक्षमें पहुँचेगी।

(२) इस प्रकारकी भावना पैदा होने के लिए वह जैन ही हो ऐसी कोई बात नहीं।

(३) जैनधर्मका दुश्मन बनने पर भी अगर उसमें मोक्षेच्छा तीव्रतासे उत्पन्न हो गई तो अंतमें वह मोक्षमें जायेगा।

जिस भवमें (जिस शरीर में) वह मोक्षमें जानेवाला हो उस भवमें उसका जैन कुलमें ही जन्म लेना चाहिए यह आग्रह भी नहीं है।

जिस शरीरसे निकलकर वह मोक्षमें जानेवाला है उस शरीरमें उसने जैनधर्मका कोई बडा गुनाह किया हो या उसका विरोधी बना हो ऐसा भी सम्भवित है।

जैनधर्मको माननेवाला ही स्वर्गमें जायेगा और अन्य सब नर्कमें जायेंगे ऐसी जैनधर्मकी मान्यता नहीं है।

जैन मातापिताका पुत्र हो फिर भी उसका अयोग्य आचरण हो तो वह नर्कमें जायगा और जैनकुलमें नहीं जन्मा हुआ कोई जैनधर्म का पालन तो क्या पर जैनधर्म के नाम से परिचित न होने पर भी स्वर्गमें जा सकता है।

पर इतना तो सुनिश्चित है कि रागद्वेषसे मुक्त बना हुआ कोई भी 'जिन' कहलाता है और उनका बतलाया हुआ धर्म ही 'जैनधर्म' है।

जिस प्रकार नदीके द्वारा सभी झरने एक होकर समुद्रमें मिलते हैं उसी प्रकार एक वीतरागदशा के द्वारा ही सब मोक्षमें जाते हैं। इस प्रकार मोक्षरूप सागरसे मिल जानेवाली नदीका एक नाम 'जैनधर्म' है। इसी उदारता

कारणसे जैनधर्मके अनुयायियोंमें या आचार्योंमें कभी धर्मांधता सच कहें तो यह माहांधता भी नहीं आई। जैनधर्ममें यह आग्रह कभी नहीं है कि जो जैनधर्मका पालन नहीं करता उस पर जुल्म ढोंगा–अत्याचार करो।

पर

सबसे पहले अपने जीवनमें संपूर्ण रूपसे पवित्र से जैनधर्मका आचरण करो। फिर दूसरों को प्रेमभाव से तथा करुणाभाव से सत्य समझाओ। वह भी इस प्रकार कहकर नहीं कि तू झूठा है पर इस प्रकार कहकर कि भाई तेरा मान्यतामें मैं कहूँ इतना सुधार कर मुझसे विरुद्ध मत रखनेवालाका झूठा है यह कहने की अपेक्षा उसका कुछ स्वीकार ले जिसमें तेरी सच्चाई प्रतीत होगी यही है स्याद्वादका संदेश।

सरल भाषामें अगर कहना हो तो किसीका काना अपेक्षा ' भाई संपूर्ण देखनेके लिए दो आँखोंकी आवश्यकता है' ऐसा कहना यही स्याद्वाद है।

फिर भी जैनधर्मियोंकी संख्या जैनधर्मके उग्र तप त्याग संयम पालनकी विकटताके कारण इस जमानेमें कम हो तो कोई आश्चर्य नहीं है। इसके लिए आचार्य विनोबाजीके दो शब्द काफी हैं।

'जैनोंमें दूसरे धर्मोंकी अपेक्षा संख्याका मोह कम है। मनसे लोग पूछते है कि आज जैनियोंकि संख्या कम क्यों है ? मैं कहता हूँ कि कम संख्या बुद्धिमानीका निशाना है। सक्कर मिठी है वह दूधमें घुलमिल जाती है तो अपना अस्तित्व व्यापक बना देता है। सक्कर पिघलने पर लोग कहते है ' दूध मीठा है ' पर वास्तविक बात तो यह है कि वह सक्करकी मिठास है। जैन भी अन्यों में घुलमिलकर उनमें चुपचाप मधुरता भर देते हैं। महाराष्ट्र में जब बालक को पाठशाला में भर्ती किया जाता है तो सबसे पहले उसे 'श्री गणेशाय नमः' सिखाया जाता था। वहाँ के बालक वहीं पर शिक्षक जैन थे इसलिए दूसरा पाठ 'ॐ नमो सिद्धम्' पढ़ाया जाता था। आज भी इसी प्रकार से लिखा जाता है।

आज जैन धर्म बहुत छोटा है (संख्या की अपेक्षा) पर सक्कर की तरह वह अपना अस्तित्व अन्यों में व्यापक कर अनश्वर रीति से रहा है। मात्र संख्या बढ़ाना मूल है गौण बात है।'

(विनोबा भावे जैन भारती वर्ष-१५ अंक-१६)



प्राचीनता अनादिता

भारत देश अपनी पुरानी संस्कृति के लिए दुनिया में परिचित है।

भारत में भूतकाल में सतपुरुष दिव्यज्ञानी महात्मा विराजते थे। भूत-भविष्य-वर्तमान को हस्तामलकवत् जान सकते थे। दुनिया के इतिहासकारों ने भी इस बातका समर्थन किया है। इसलिए भारत 'पुराना सो सोना' कह कर उसपर गौरव रखता है जो स्वभाविक ही है।

जैन धर्म भी पुराना है। तुम पूछोगे कितना पुराना? इसका जवाब है इस दुनिया के जितना पुराना।

शायद यह बात आपके समझ में न आयेगी। पर यह हकीकत है कि जैन धर्म दुनिया के जितना ही पुराना है।

यह बात कितने ही जिनेतर विद्वानो ने[1] स्वीकार की है। विज्ञान इतना बढा है फिर भी ज्ञान का विकास बहुत कम परिणाम में हुआ है जिससे इतिहासकारो ने दो काल खण्ड माने है।

(१) ऐतिहासिक काल (२) प्राग् ऐतिहासिक काल

सब विद्वानों ने निःसंदिग्ध शब्दों में स्वीकार किया है कि प्राग् ऐतिहासिक काल में जैन धर्म का अस्तित्व था। कोई भी पूछ सकता है कि इसका सबूत क्या है? किन प्रमाणो से आप प्रमाणित कर सकते हैं। कि जैन धर्म दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म था?

---

1 "It is impossible to know the begining of Jainism"

Major General Forlong

जैन धर्म की आदि जानना असंभव है।

Jainism began when this world began, I am of the opinion that Jainism is much older than vedas

Swami Ram Misharaji Shastri
Prof San krit College,
Banares

"जबसे यह विश्वका प्रारंभ है तब से जैन धर्म विद्यमान है। मैं तो मानता हूँ कि जैन धर्म वैदिक धर्म से भी प्राचीन है।"

कारण ?

दुनिया के जितना ही वह प्राचीन है। उसके प्रथम स्थापक की बात कहना भी मुश्किल है।

भगवान महावीर भी जैन धर्म के प्रथम[2] स्थापक न थे। वे तो मात्र जैन धर्म के इस अवसर्पिणी के सबसे अन्तिम यानी २४ वे तीर्थंकर थे।

भगवान महावीर ने यह कभी नहीं कहा था कि मैं इस नये धर्म का प्रस्थापन करता हूं। उनके उपदेश में उन्होंने साफ तौर पर कह दिया है कि मैं तो वह तत्त्व कह रहा हूं जो पुराने काल में अनंत तीर्थंकरों के द्वारा कहा हुआ है। उसको ही दुहराता हूं।

---

2 Bhagwan Mahavir again taught Jainism Before him there were twenty-threee (23) Teachers They also propagated Jainism From this the antiquity of Jainism is established

– Lokmanya Bal Gangadhar Tilak

भगवान महावीर ने जैन धर्म का पुनः प्रकाश किया था। उनके पूर्व भी २३ तीर्थंकर हो गये जिन्होंने भी जैन धर्म का प्रचार किया था। इससे जैन धर्म की प्राचीनता प्रमाणित होता है।

इस प्रकार जैन धर्म ग्रंथो की दृष्टि से जैन धर्म का सबसे प्रथम स्थापक कोई भी नहीं है।

तुम पूछोगे कि क्या ऋषभदेव तो पहले तीर्थंकर हैं न? हाँ, इस अवसर्पिणी काल की दृष्टि से वे पहले तीर्थंकर हैं अनन्तकाल की अपेक्षा से नहीं।

कारण?

उन्होंने भी यही कहा कि "अनंत तीर्थंकरों ने जो कुछ कहा है वही मैं कहता हूँ। कुछ भी नया नहीं कहता।"

इस प्रकार जैन धर्म का कोई भी तीर्थंकर यह नहीं कहता कि मैंने नया धर्म कहा है।

अन्य सब धर्मों के संस्थापकों के नाम हम मिलते हैं। इन संस्थापकों का ने–सबसे पहले संस्थापकों ने–उनके ही धर्मग्रंथोंकी रचना की जिससे जगतका सबसे प्राचीन धर्म जैनधर्म है यह स्वभाविकता से ही सिद्ध हो जाता है।

पर,

अगर कोई प्रतिवाद करे कि यह तो सब प्राक् ऐतिहासिक काल की बात है इसलिए यह विश्वास के योग्य नहीं है। तीर्थंकरों ने कहा है कि हम जैनधर्म के प्रथम स्थापक नहीं

हमें तो जनधम दुनियाका सबसे प्राचीन धर्म है इसके लि
ऐतिहासिक प्रमाण की आवश्यकता है।

आज उपलब्ध ग्रथोमे प्राचीन से प्राचीन ग्रथ हिंदु वेद मा
जाते है। सब विद्वान वेदों को कमसे कम पांच हजार वर्ष पूर्व
मानते है।

अब आप कहेंगे कि फिर तो हिंदुधम ही प्राचीन कहलायेगा
क्योंकि उसके ग्रथ तो जनधम के ग्रथोसे भी प्राचीन है।

पर

भाई! उन वेदों से ही जनधम प्राचीन प्रमाणित होता है

कारण ?

वेदों में भगवान ऋषभदेव भगवान अरिष्टनेमि आदि
नाम आते हैं। केवल नाम ही नहीं उनके मत्र भी हैं। इस
स्वय प्रमाणित हो जाता है कि वेद लिखाये गये उससे पह
जैनधम का अस्तित्व था। जनधम के तीर्थकरो की बात तो उ
समय भी मशहूर थी।

वेदो में आनेवाले ये नाम आरण्यक श्रीमद् भागवत औ
पुराणों से भी समर्थित है उसमें जनधम के चोबीस तीर्थकरो
बात का स्विकार है। भगवान ऋषभदेव का चरित्र भी व
मिलता है।

गजुश्य गीरनार आदि जनों के परम पवित्र स्थाना का भी वहाँ उल्लेख हैं। वेदा में प्राग मनाने जनधम की प्राचीनता सिद्ध हाती हैं।

डा हमन जेकोबी, सवपल्ली [1] राधाकृष्णन लोकमान्य तिलक आदि भारतके और बाहरके विद्वानाने भी यह प्रमाणित कर दिया है कि 'जैन धम प्राचीन धम है।'

वेदान्त [2]परिव्राजकाचायन भी मान्य किया हैं कि जनधम यही प्राचीन धम है।

मोहन-जो-डेरा के प्रसिद्ध शहर की सस्कृति पाच हजार वष पुरानी मानी जाती है उसमे से उपलब्ध योगमुद्रावाली प्लेट[1]

1 There is nothing wonderful in my saying that Jainism was in Existance long before vedas were composed

२ आज म आपके सामने स्विकार करता हूँ कि प्राचीन धम परमधम जा कोई सच धम हो ता वह जन धम हैं। जो बाते पुराणों में कही है वे सब जन शास्त्रा से सकलित हैं। 'परमहंस परिव्राजकाचाय स्वामी योगी जीवानद'

1 Seal No 449 reads Jineshwar

और सील में (Seal) ऊपर जिनवर नाम भी एक विद्वान ने पढ़े हैं।

इस के उपरान्त मोहन–जो–दरो की सभ्यता का संबंध जितना जैनधर्म से है उतना अन्य किसी संस्कृति से नहीं है। इस प्रकार भूस्तर शास्त्रके द्वारा भी जैनधर्मकी प्राचीनता सिद्ध होता हैं।

3 ईजिप्तमें लाखों वर्ष पहले जो धर्म प्रचलित था वह भी जैनधर्मके समान ही था यह बात विद्वान मानते हैं।

अबतक उपलब्ध प्राचीन मूर्तियोंमें सबसे प्राचीन मूर्ति अगर कोई हो तो वह तीर्थंकरोंकी ही है जो पटना के संग्रहालयमें हैं।

ब्राह्मी लिपिमें लिखित जैनधर्म के पाषाण लेख भी असंख्य हैं।

प्राचीन गुफाएं मूर्तियाँ आदि सब जैनधर्म की प्राचीनता सिद्ध करते हैं।



3 The religion of very ancient Predynastic Egypt, supposed to be lakhas of years old appears to be quite akin to Jainism

'Robert Churchwell'

७५

प्रसार

एक भूगर्भशास्त्रीय विद्वान ने एक स्थान पर लिखा है कि यदि तुम भारत के किसी भाग के ऊपर सात मील के व्यास में जमीन में खुदाई करो तो कम से कम जैन संस्कृति का एक अवशेष अवश्य तुम्हें मिलेगा।

मेरे या तुम्हारे समान कोई यह बात करे तो अतिशयोक्ति कहकर हंसी में वह उड़ाई जाय पर जब भूस्तरशास्त्री विद्वानों की ओर से यह अभिप्राय प्रकट होता है तो इसके भी कुछ खास कारण होने चाहिए।

एक समय था कि जब जैन धर्म फूलाफला था। भारतभर में यह प्रमुख धर्म था। भारतीय मत दर्पण नाम के पुस्तक में उस समय जैनों की संख्या ४० करोड की बताई है।

परदेशी प्रवासी ह्यु-एन त्सांग और इत्सिंग के द्वारा किये गये लेखों में जैन धर्म के विशाल श्रमणसंघ तथा का वर्णन मिलता है।

श्रेणिक उदायी चद्रप्रद्योत सम्प्रति खारवेल, प्रियदर्शी अशोक, चद्रगुप्त कुमारपाल आदि अनेक जैन राजाओ ने जैन धर्म का प्रशसनीय प्रसार किया है।

श्रेणिक राजा के समय में उनके महामंत्री अभयकुमार ने (आज के एडन) आर्द्रपुर के राजकुमार को विशिष्ट रीति से जैन धर्मी बनाया था जो अत में जैन साधु बना।

महान सम्राट सिकन्दर भारत विजय के बाद यहाँ की सस्कृति अपने साथ ले जाना चाहता था। वह अपने साथ जैन साधु को ले गये थे जिस का वर्णन ग्रीक इतिहासकारों के लेख से उपलब्ध होता है।

आज भी एथेन्स में उस जैन साधु की समाधि होने की मान्यता प्रचलित है।

बौद्ध धर्म के महावश पुराण के उल्लेख से प्रमाणित होता है कि सिलोन में भी जैन धर्म का प्रसार था। वहाँ के राजाने जैन मुनि के लिए एक स्थानक बनवाया और श्रावकों के लिए मंदिर बंधवाया था।

रोम के संग्रहालय में भगवान पार्श्वनाथ की भव्य प्रतिमा है। पूछताछ से मालूम हुआ वह अमेजान नदी तट के किसी गुफा से प्राप्त हुई है।

ईसाई धर्म संस्थापक येशुख्रिस्त की जैन साधु से मुलाकात हुई थी। इसका उल्लेख मिलता है। तिबेट में हिमगीरि ... से प्राप्त एक ताडपत्री पर इस घटना का उल्लेख ... है।[१]

इस प्रकार भारत की सीमा से दूर जैन संस्कृति के अवशेष मिलते हैं। भारत ही नहीं बल्कि भारत के बाहर भी ऐसी ... मिलती है जिनपर जैन संस्कृति की छाप है। अन्याय कारणों से उनका धर्म परिवर्तन हुआ है फिर भी वे अपने परंपरागत संस्कार भूल नहीं पाते।

बंगाल का मूलधर्म जैन धर्म था जिसे प्रबोधचंद्रसेन नामक विद्वान ने प्रमाणित किया है और आज की प्राचीन बंगाल की ... ही जानिया में जैन संस्कारों की झलक दिखाई देती है।

इस प्रदेश में सराक नामकी जाति दिखाई देती है। विद्वानों ने प्रमाणित किया है कि 'सराक' शब्द 'श्रावक' शब्दका अपभ्रंश है। प्राचीन काल में जैन धर्म के लिए अहत्धर्म-श्रावकधर्म

Some of the Jaina priest persauded him to accept Jain religion

M C NOTOVICH
(Christ in India)

निर्ग्रंथ धर्म आदि शब्द अधिक प्रचलित थे। इससे सदार प्राचीन जैन थे यह सिद्ध होता है।

और देवांगी आरमुन जाति में जैन धर्म के आचार विचार की अधिकता दिखाई देती है। आरमब ब्राह्मण ... का ... रूप माना जाता है।

दक्षिण भारत में लगभग सभा लिंगायत धर्मी पहले जैन थे यह बात मशहूर है। तामिलनाड में (Madras State) भी तब कितने ही हिन्दु ... जिनके पूर्वज जैन थे। मद्रास के ... मंत्री ... ने भी कहा है कि उनका पूर्वज जैनधर्म था। उनकी जाति के सिवा अन्य जातियों में ... जैनधर्म का आचरण पाया जाता है।

आन्ध्रप्रदेश में कमती कोमटा कोम भी पहले जैन थी। गोमटेश्वर के (बाहुबली) भक्त होने से वे गोमटी कहलाने और उसका अपभ्रंश कोमटी बना। ... के श्रीमानत ... भी मद्यमांस से दूर है वे भी पहले जैन थे।



प्रभाव

इतिहास साक्षी है कि सबकी उन्नति अवनति होती ही रहती है। सभ्यता की दृष्टि से जनपद की ओर सबकी पड़ती है। फिर भी भूलराज में जब धर्म का साहित्य, संस्कृति तथा शिल्प दिया है वह गौरवपूर्ण है।

दुनिया की इसकी नमस्कृति समान महान [illegible] सुधन्य एवं अनाताप की [illegible] है। इस ग्रन्थ की [illegible] महत्ता बड़ी विशाल है। उस [illegible] सभी साहित्य [illegible] और विज्ञान तथा भाषाओं का उसमें समावेश होता है। इसमें ६८ [illegible] में लिखा गया यह ग्रन्थ है जो भिन्न भिन्न [illegible] भाषाओं में [illegible] विद्वानों का [illegible] है। आज उसका कुछ अंश का सम्पादन कार्य चल रहा है।

साहित्य [illegible] तथा [illegible] भिन्न भिन्न [illegible] नहीं है। आज भी साहित्य के मर्मी विद्वान् यह इस [illegible] कहते हैं। 'सिरिभूवलय' [illegible]

थे पाँच महाकाव्यों के रचयिता जैन मुनि ही थे। 'नन्नूल' जैसा तामिल का आदि व्याकरण भी जैन साधु की रचना है।

कन्नड भाषा के निर्माण में तामिल भाषा के निर्माण से भी अधिक श्रेय जैन संस्कृति को प्राप्त है।

कन्नड भाषा के आदि कवि पम्प भी जैन थे।[1]

कन्नड साहित्य के सब अंगों में जैन साहित्य सम्पन्न होकर विकसित बना है। हिन्दी राजस्थानी गुजराती उर्दू इंग्लिश, फ्रेंच जर्मन आदि भाषाओं में भी विपुल जैन साहित्य निर्मित हुआ है। आज भी जैन साधु एवं श्रावकों के द्वारा अविरत साहित्य सृजन एवं प्रचार जारी रहा है।

अर्धमागधी संस्कृत प्राकृत मूलपिशाची अपभ्रंश भाषाओंमें जैन साहित्य विपुल एवं व्यापक है जो साहित्य की समझ हो आज भरता है। एक विद्वान का कथन है कि अगर संस्कृत साहित्यमें

1 The first poet of Kanada language is a Jain The credit for writing the ancent and the best literary work goes to the Jainas

Dr R R NARSHIN ACHARYA

से जैन साहित्य निकाल दिया जाय तो बेचारी संस्कृत कविता की क्या दशा होगी[1] ?

एक साथ एक नहीं पर एक श्लोक के सात सात अर्थ हो और प्रत्येक अर्थ से अलग अलग कथा निर्माण हो ऐसा अद्भुत 'सप्त संधान' काव्य जैनाचार्य की ही कृति है।

मात्र एक ही पद " राजानो ददते सौख्यम ' के आठ लाख अर्थ कर देनेवाले जैन मुनि है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा की अद्भुत एवं अनोखी उपासना कर संस्कृत भाषा को विश्व की महानभाषा का बिरुद दिलानेवाले जैनाचार्य है।

महान वैराग्यरंग से रंगने पर भी जैन मुनियों ने कामशास्त्र, संगीतशास्त्र रत्न परीक्षा तथा ज्योतिष जैसे शास्त्रों को भी ज्ञान दृष्टि से पुष्टकर उसे समृद्ध बनाया है।

  

1 Now what would Sanskrit poetry be without the large Sanskrit litrature of Jains

Dr HERTL

जैन कला

जैन साहित्य ने न केवल भारत के साहित्य सृजन में अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा को विकसित किया बल्कि उसने स्थापत्य कला तथा चित्रकला से भी इस देश को विभूषित किया है। धर्म धर्मकला का अन्तिम शिखर है यह बताने की क्षमता इन दिशाओं में अनेकानेक शिल्पों की निर्मिता हुई।

प्राचीन स्तूप, गुफाएँ, गुफामंदिर तथा अन्य शिल्पों का सृजन हुआ। बिहार की बाराबर की आकृति, भुवनेश्वर की, उदयगिरि–खण्डगिरि की हाथी गुफाएँ, पदुकोट्टई की सित्तनवासल की गुफा, हाल ही में नासिक के पास प्राप्त २४०० वर्ष पुरानी महाराष्ट्र गुफाएं, गुजरात में गीरनार तथा ढाँक की गुफाएं, मथुरा के स्तूप, इलोरा की गुफा मंदिर जैन ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत के इतिहास के मूर्तिमान मानस्तम्भ है।

दक्षिण की सितानवासन गुफा के दीवार चित्र तथा कल्पसूत्र उत्तराध्ययन आदि सुनहरे अक्षरो में लिखित शास्त्रो के चित्रो ने प्राचीन चित्र जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

पूरे एशिया में ही नही पर शायद दुनिया में एक ही छोटी टकरी पर छोटे बडे लगभग २५०० से ३००० मंदिरो का निर्माण करनेवाला शत्रुंजय का जीर्णोद्धार सचमुच अभूतपूर्व ही है।

संगमरमर के सफेद पत्थरोंमें से दूध जैसी उज्वल मीठी धारा सी संगीतधारा का प्रवाहित करनेवाला जैन शिल्प ही है।

आबू देलवाडा कुमारिया अचलगढ तथा राणकपुर की पत्थर की खुदाई भारत में ही नही अपितु दुनिया में भी शिल्पशास्त्र का अमोल खजाना है।

कीमती रत्नोंसे लेकर मामूली रत से बनी हुई लाखो नही करोडो जिनमूर्तियो से भारत को विभूषित एवं मंडित करनेवाला जैनधर्म ही है।

आज भी जैन मंदिरो में संगीत शिल्प चित्र और खुदाई के अमोल नमूनो का अपार संग्रह है।

अहिंसा अनेकांत अपरिग्रह आदि से
जैन संस्कृति ने केवल भारत में ही नही
आचार विचार में अभूतपूर्व परिवर्तन लाये है

पशुवध तथा मनुष्यवध की शास्त्रवार्ता को इसी संस्कृति ने ही दबा दिया। आज इस प्रश्न को धर्म में अब कोई स्थान प्राप्त नही है।

सत्यांश हर सबके समन्वयमें है यह दिव्यदृष्टि इसी संस्कृति का प्रभाव है। वस्तुमात्र को एक ही दृष्टि से नही अनेक ही नहीं पर असंख्य एवं अनंत रीतिओ से विचारा जा सकता है इसलिये सत्य हमेशा सापेक्ष होता है यह महासत्य इसी संस्कृति की देन है।

इस प्रकार मौलिक चिंतन धारा की पुनित देन से जैनधर्म ने मानव मात्र का उपकार किया है।



एक कर्तव्य

जैन धर्म की मान्यता

भव्य इतिहास

मनोहर मूर्तकार

उसकी विचाराधीन [illegible]

और

[illegible]

[illegible]

उमड़ती है। तब तेरे या तेरे शासन के प्रति द्वेष तो पैदा ही कैसे होगा?

इस प्रकार उनके समान निर्ग्रन्थसाहित्य के मुक्त मार्मिक का मनमयूर रूप से नृत्य करता हो फिर हमारे जैसे सामान्य जन का हृदय असीम रूप में भर जाय इसमें आश्चर्य क्या है?

पर पर पर

यहाँ सोच इतना ही रखो

यह

किसके प्रकाश से?

किसके प्रभाव से?

और

किसके पुरुषार्थ से?

तीर्थंकर भगवान के केवलज्ञान के प्रकाश से

निर्ग्रन्थ-त्यागी महाव्रतधारियों की पुनित आराधना से

शासन के लिये तन-मन-धन निछावर करनेवाले उदारचरित श्रावक श्राविकाओं के पुरुषार्थ से

इस लिए संख्या मोह छोड़कर सामर्थ्य का मोह रखो।

प्रचार मोह छोड़कर प्रभाव का ध्यान रखो।

धर्म और

इसमें भी महान जैन धर्म के लिये प्रचार की नहीं आचरण की आवश्यकता है।

आचार आचार होगा
प्रचार आचार होगा (प्र + आचार)
तो
प्रचार अपने आप होगा।
इस लिये आवश्यकता जैन बनाने की नहीं है पर
जैन बनने की
जिन बनने की
जिनेश्वर बनने की है
एक बार जिनेश्वर बनने पर
सम्पूर्ण विश्व तुम्हारे चरणों पर झुकेगा।
और
और घर जैन होगा।

  

॥ श्री जिनेन्द्राय नमः ॥

卐  卐

हाँ हमे भी स्वीकार है.....!

यहाँ विश्व के गणनापात्र श्रेष्ठ विद्वानोंके जैन धर्म के विविध पहलुओं के विषय मे अभिप्राय दिये हैं

लगभग सब व्यक्ति ख्यातनाम होने से उनका परिचय इस छोटीसी पुस्तिका में देना असंभव है। पर इनमें एक भी व्यक्ति जन्मजात जैन नहीं है।

दो तीन युरोपियन विद्वान जैन तत्त्वज्ञान से आकृष्ट होकर कर्म से जैन बने हैं। बाकी सब अपने अपने धर्म का पालन करते हुए भी किस प्रकार जैन धर्म के विविध पहलुओं की महत्ता को स्वीकृति देते हैं यह बतानेका यह प्रामाणिक प्रयास है।

वाचक जैन हो या जैनेतर किसीके भी लिए यह आवश्यक नहीं सब अभिप्रायों को वाचासा अपने सिर आँखों पर चढ़ावे।

पर

सच तो यह है कि उन विद्वानों ने पुरुषार्थ से जिन तत्त्वज्ञान का मंथन कि

४

कर। अन्य के अभिप्रायों के दाग में रमन मात्र से तुम सत्य के समीप नहीं पहुंच सकोगे।

इस लिए इन सब अभिप्रायों का शिक्षा सूचन समझकर तुम अपने अभिप्राय पर दृढ बनो। अपना स्वयं अभिप्राय बनाओ।

  

Jain has contributed to the world the sublime doctrine of Ahimsa No other religion has emphasised the extent that Jainism has done Jainism deserves to become the universal religion because of its Ahimsa doctrine

जैन धर्म ने दुनिया को उच्चगामी अहिंसा तत्त्व की देन दी है। अन्य किसी धर्म ने अहिंसा को आधार एवं विचार में जैनधर्म के समान महत्त्व नहीं दिया। जैन धर्म अपने अहिंसा के तत्त्वज्ञान के कारण विश्वधर्म बनने योग्य है।

डा. राजेन्द्रप्रसाद
भारत के प्रथम राष्ट्रपति

  

Lord Mahavira proclaimed in India that religion is a reality and not a mere social convention It is really truth '

'भारत में भगवान महावीरने उद्घोषणा की, कि धर्म मात्र सामाजिक रूढि नहीं वह वास्तविक सत्य है।"

डा. रविन्द्रनाथ टागोर

  

'सज्जनो !

आप जानते हैं कि मैं वैष्णव सम्प्रदाय का आचार्य ही नहीं हूं पर इस सम्प्रदाय का सब प्रकार से रक्षक हूं। और इस सम्प्रदाय की ओर टेढी नजर करनेवाले को सीधा करनेवाला भी हूं फिर भी इस जाहिर सभा में सत्य के खातिर मुझे यह कहना पडता है कि जैनों का ग्रन्थ समूह सारस्वत महासागर है।'

स्वामी राममिश्र शास्त्री, काशी

  

Yes ' his religion (Jainas) is the only true one upon earth primitive faith of all mankind '

हां ! जनधर्म ही विश्व का सत्य धर्म है। मानव जाति का सर्व प्रथम धर्म जैन धर्म भी है।

रेवरेंड ए जे डुबोइस

  

In Jainism I find solution to the here to unsolved problem of existence. I find plain answers to difficult questions which connot be truthfully refuted and which sink in to and satisfy every corner of the brain and which if attacked by a searching criticism show up only still brilliantly.

अब तक मैं अस्तित्व के उलझी हुई समस्या का समाधान जैन धर्म से पा सका हूँ। कठिण समस्याओं के सरल उत्तर ऐसे हैं कि जिसका प्रतिवाद कोई भी न कर सके। फिर भी जब उसका खण्डन किया जाता है तब उसका समाधान उज्वल स्वरूप में बाहर आता है।

एच वारन लन्दन

(वारन महोदय ने सात व्रतों का स्वीकार कर जैन बनके जैन धर्म का लण्डन में प्रचार किया है।)

  

वे (भगवान महावीर) एक अगाध सागर थे। जिसमें मानव प्रेम की तरंगे ही ऊंची उठती थी। केवल मानव ही क्यों जीवमात्र की भलाई के लिए उन्होंने सब कुछ निछावर कर दिया।"

महात्मा शिवव्रत लालजी वर्मन एम ए

(अनेक पत्रों के सम्पादक तथा वेदान्त करपद्रुम आदि अनेक ग्रंथों के लेखक)

' ईर्ष्या और द्वेष के कारण धर्म प्रचार में रुकावट लानेवाली बाधाएँ आती रहीं फिर भी जैन शासन कभी भी पराभूत न हुआ बल्कि वह विजयी ही बना।

श्री स्वामी विरूपाक्ष वडियर वेदतीर्थ
प्रोफेसर संस्कृत कॉलेज इंदौर

❖ ❖ ❖

" The Jains are a veritable oasis in the desert of human strife and worldly ambition It were a better world indeed if the world were Jain

भौतिक कामना और मानवीय महत्वाकांक्षाओं के इस रेगिस्तानी भूमि में जैन हरेभरे प्रदेश जैसा है। अगर सम्पूर्ण विश्व जैन होता तो सचमुच यह विश्व जैन होता तो सचमुच यह विश्व अतिसुंदर बन जाता।

डा. मारग्रेट ल्यूमनिवर्ड
आरगन स्टेट यूनिवर्सिटी
[illegible] (यू. एस. ए.)

❖ ❖

नम अननीलनने जन ग्रथो म आलखित परपरा की पुष्टि की ह । य नव मनाइन जन धम तथा उसकी अतिप्राचिनता के प्रमाण प्रस्तुत करते ह ।

मेजर जनरल फर्लांग

  

All upper Western North Central Asia then sav 1500 to 800 B C existed throughout India an ancient nd highly organised religion philosophical ethical and severaly ascetical viz Jainism, out of whi h clearly developed the early ascetical features of Brahminism and Buddhism

और उस समय ईसास पूव १५ ० से ८०० सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में अति प्राचीन तथा सु यवस्थित और दार्शनिक नतिक तथा पूण सयमयुक्त धम विद्यमान था। यह धम ही जनधम था। इसीके सहारे पारम्भिक बौद्ध तथा ब्राह्मण धम व साधुओं के नीति नियमो का विकास हुआ।

डा इ थामस
(शार्ट स्टडीज इन दी सायन्स ऑफ कपरेटिव रिलीजियन)

  

जनिया में २२ वे तीथकर नेमिनाथ ऐतिहासिक पुरुष माने जाते है। भगवद्गीता के परिशिष्ट में श्री बर्वेजी ने स्वीकार किया है कि नेमिनाथ श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे। अगर जैनों के २२ वे तीथकर नेमिनाथ कृष्ण के समकालिन थे तो शेष इक्कीस तीर्थकर कीतन प्राचीन समय में विद्यमान होंगे इसका अनुमान पाठक ही लगा ले।

डॉ फुहरर
(एपिग्राफिआ इण्डिका वाल्युमर)
पृष्ठ १८

❖ ❖ ❖

Jainism is completely different from Hinduism and independent of it

जैनधम हिंदुधम से बिलकुल भिन्न एव स्वतत्र धम है।

श्री कुमारस्वामी शास्त्री
मद्रास हाईकोट के चिफ जस्टीस

❖ ❖ ❖

जब हिंदुओ ने देखा कि जनधम का असर उस मन को प्रबल बना रहा है तब मत्र हिंदुओ ने सोचकर

'The Jain philospher as I know is free from dogmatism Frankly realistic and stands in close to other realistic chool of thought They have left for the postreity a full fledged philosophy which is indeed in valuable heirloom

मोहम्मद अब्दुल वहीदखान
डायरेक्टर आफ आर्कियालाजी (पृ ११) ए पी

  

गुजराती भाषा के साम्पणिक स्वरूप का आरम्भकाल (जैन) आचार्य हेमसूरी का समय स (१२२९) ज्ञात होता है और शालिभद्रसूरि नाम के जैन साधु ने भरतेश्वर बाहुबली रास' नामका वीर रस काव्य वि स १२४१ जैसे प्राचीन काल में रचा था। प्राचीन गुजराती से लेकर अर्वाचीन गुजराती तक के पुराने जैन कवियों कि क्रम ने ऐसा कमाल बतलाई है कि उनकी परिचयात्मक सूचीके चार बृहद ग्रन्थों के लगभग २००० से अधिक (रॉयल १६ पेजी) पृष्ठ छपे हैं।

प्रो केशवराम के शास्त्री
गुजरात के प्रसिद्ध भाषाशास्त्री

  

'प्राचीन रूढ़िवादी हिन्दुधर्म के बड़े बड़े आचार्य आज तक यह भी नहीं जानते कि जैनों का स्याद्वाद किस चिड़ीया का नाम है।"

हिन्दी के सर्वोत्तम लेखक महावीर प्रसाद त्रिवेदी
(सरस्वती)

  

जबसे मैंने शंकराचार्य से किया हुआ जैन धर्म का खंडन पढ़ा तबसे मुझे विश्वास हो गया कि इस सिद्धांत में कुछ है। जिसे वेदांत के आचार्य समझ नहीं पाये। आज तक मैंने जैन धर्म के विषय में जितना ज्ञान पाया उससे मेरी यह दृढ़ प्रतीति हुई कि जैन धर्म के मूल ग्रंथ पढ़ने का इन्होंने कष्ट लिया होता तो जैन धर्म का विरोध करने का उन्हें कोई अवसर ही नहीं मिलता।

महामहोपाध्याय गंगानाथ झा
(M A D L L)

  

I may say with conviction that the doctrine for which the name of Lord Mahavira is glorified nowadays is the doctorine of Ahimsa If any practised it to the fullest extent and of of Ahimsa, it was

■ यह बिना किसी संकोच के साथ यह कहता हूं कि अहिंसा के सिद्धांत के कारण भगवान महावीर के नाम की महत्ता प्राप्त हुई है। अगर किसी ने पूर्ण अहिंसा का आचरण में उपयोग किया हो तो उसका प्रचार किया हो तो वह भगवान महावीर ही हैं।

महात्मा गांधी

  

बुद्ध के धर्म ने सन्मान था ही इन्कार किया था। उसने अहिंसा पर आग्रह न रखा। महावीर का प्रेमकर धर्म की अनिवार्य किया है और समूचे भारत में से पशुवध निकल गया

मशालाल मनुभाई (गुजराती साक्षर)
(सिद्धान्त सार)

  

आज के विद्यमान धर्मों में जैन धर्म एक ऐसा धर्म है कि जिसमें अहिंसा की प्रक्रिया सम्पूर्ण है। ब्राह्मणधर्म में भी गुजरात के पश्चात गर्भाशिओं के लिये यज्ञ सूक्ष्मतर अहिंसा निषिद्ध हुई और अन्त में शाकाहार के रूप में यह ब्राह्मण जाति में भी अग्रभूत बना कारण यह है कि जैनों के धर्मगुरुओं ने जो लोकप्रियता प्राप्त की उसका असर दृढ़ता से बढ़ता ही गया।

एफ अ. डाहरावेर पी एच डी
(बुद्धिस्ट रिव्यू)

  

य धम (अहिंसा) ब्राह्मण और जैन दोनों का है। जैनों ने पूर्णता से जीवन में उतारा है तो ब्राह्मणों ने उसे धर्मभावना का रूप प्रदान किया है जिसे व जीवन का अंग न बना सके। इस लिये यह ब्राह्मणों का फर्ज है कि उन्हों को जैनों के साथ मिलकर इस धर्म का पूर्ण रूप से आचरण करना चाहिये।

प्रा आनन्दशंकर बापूजी ध्रुव
M A L L B
(गुजरात के ख्यातनाम विद्वान्)

  

' Such is the foundation of Jain religion and to its true followers no morality no religion is highest than the precept of Ahimsa therefore they can rightly take pride to be absolute beliver in Universal Brother Hood of all living beings

जैन धर्म का मूलभूत सिद्धांत इस प्रकार है और उसके सच्चे अनुयायी के अहिंसा मन्त्र से अधिक कोई महत्त्वपूर्ण नीति एवं धर्म नहीं है और इस लिये जीवमात्र के बन्धुत्व का उनका दावा सत्य और उचित है।

 

बौद्धधर्म को माननेवाले देशों में मांसाहारियों की अधिकता अब भी जारी है। वे स्वयं तो हिंसा नहीं करते पर अन्य के द्वारा मारे गये बकरे आदि जीवों का मांस भक्षण करने में कोई निषेध नहीं मानते। यह था बौद्धों का अहिंसा तत्त्व जिसका जैनों के द्वारा अस्वीकार किया गया।

वासुदेव गोविन्द आपटे बी ए

  

It is not correct to belive that Buddhism left some Hindu Castas like Brahmins Vaishyas etc. Vegitarian It was actually Jainism which achieved this in Andhra Buddhists eat even to oblige a devottee Jainas do not

यह कहना गलत है कि बौद्ध धर्म के प्रभावसे ब्राम्हण वैश्य जैसी हिन्दू की जातियाँ शाकाहारी रही थी। सच तो यह है कि जैनों के प्रभाव से यहाँ शाकाहार का प्रचार एवं प्रसार हुआ। बौद्धों अपने भक्तों के खातिर मांसाहार करते थे जब कि जैनों ने ऐसा कदापि नहीं किया।

एम गोपालकृष्ण मूर्ति
भा गोपाल गवर्मेंट ट्रेनिंग कॉलेज नलोर

  

Many people might be led to Jainism through Buddhism It is a stage before Jainism The matter of knowledge obscuring karmas is important in this context The Buddhists are on right path If they remove the knowledge obscuring karmas by holy acts they will see truth of Jainism in short time

Jainism was first Buddhism lane from it If we wish to have right understuding of Buddhas of Mahatma Jesus we must be grounded in Jainism

'बहुतसे लोगों को जैनधर्म की ओर बौद्ध धर्म के द्वारा लाया जा सकता सकता है। बौद्ध धर्म प्रथम भूमी है इसमें ज्ञान को आवृत करनेवाला ज्ञानावरणीय कर्म महत्वपूर्ण है। बौद्ध सत्य है अगर वे पवित्र प्रवृत्ति के द्वारा ज्ञानावरणीय कर्म का नाश करेंगे तो जैन धर्म का सत्य थोड़े समय में ही वे समझ पायेंगे। जैनधर्म पहले था और बौद्ध धर्म उसमें से ही पैदा हुआ अगर हम बुद्ध को ईसा को ठीक ढंग से समझना चाहते हैं तो जैनधर्म ही उसकी नींव होनी चाहिए।

मि. जो. एल. जैन
इमर्सन कालेज बोस्टन

(पू. आचार्यदेव विजयसूरीश्वरजी महाराज साहेब के साथ पत्रोत्तर में उन्होंने यह बात स्पष्ट की है)

  

The Jaina Sadhu leads a life which is praised by all. His practise, Vratas and rites strictly shows to the world the way one has to go in order to realise the soul, the Ahimsa. Even the life of a Jain householder is so faultless that India should be proud of him.

"जैन साधु जीवन की सब प्रशंसा करते हैं। जैन साधुओं ने अपने व्रत तथा नियमों का दृढ़ता से पालन कर जगत को आत्मा की प्रतीति का रास्ता बतलाया है। जैन गृहस्थ का जीवन भी ऐसा निर्दोष रहता है कि जिस पर भारत को गौरव रखना चाहिए।"

डॉ. मणिचन्द्र विद्याभूषण



वेद एवं पुराणों में

जैन तीर्थंकरों की स्तुति

इस विभाग में वेद, महाभारत, भागवत तथा पुराणों में जैन धर्म की प्राचीनता को प्रमाणित करनेवाले अवतरणों का संग्रह है। इससे यह स्पष्ट होगा प्राचीन व प्रार्वाचीन काल में भी जैन धर्म स्वतन्त्र व्यापक रूप में विद्यमान था कि वैदिक व ब्राह्मण साहित्य में भी उनका नाम गौरव व सम्मान के साथ उल्लिखित किया गया था। अतः रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिये।

ॐ नमो ऋषभो — यजुर्वेद

ॐ रक्ष अरिष्टनेमि स्वाहा — यजुर्वेद

ॐ त्रैलोक्य प्रतिष्ठितानां चतुर्विंशति तीर्थंकराणां ऋषभादि वर्धमानान्तानां सिद्धानां शरणं प्रपद्ये' — ऋग्वेद

ॐ पवित्रं नग्नमुपवि (ई) प्रसामहे येषां नग्ना (नग्नये) जातिर्येषां वीरा' — ऋग्वेद

ॐ नग्नं सुधीरं दिग्वाससं ब्रह्मगर्भं सनातनं उपैमि वीरं पुरुषमर्हन्तमादित्यवर्णं तमसः पुरस्तात् स्वाहा' — ऋग्वेद

'अहन् बिभर्षि सायकानि, घ वाहन् निष्कं यजतं विश्वरूप अर्हन्निदंदयसे विश्वं भवभुवं ' ऋग्वेद

ॐ नमो अर्हतो ऋषभो ॐ ऋषभं पवित्रं पुरुहूतमध्वरं यज्ञेषु नग्नं परमं माहसंस्तुतं वरं शत्रुंजयं तं पशुरिंद्र माहुरिति स्वाहा। ॐ त्रातारमिंद्रं ऋषभं वदंति अमृतारमिंद्रं हवे सुगतं सुपार्श्वमिंद्रमाहुरिति स्वा" ऋग्वेद

'आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्नहु। रूपामुपासदामेतत् तिस्रो रात्रीः सुरासुता।" ऋग्वेद

'स्वस्ति न तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ' ऋग्वेद

'तरणि सिषासति वाज पुरंध्या युजाआवइन्द्र पुरुहूत नमो गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रू।' ऋग्वेद

दीर्घायुर्बलायुर्वा शुभजातायु ॐ रक्ष रक्ष अरिष्टनेमि स्वाहा।"

वामदेव शान्त्यर्थमनुविधीयते सोऽस्माकं अरिष्टनेमि स्वाहा।"

'अजितं जिनेन्द्र तद्वर्धमानं पुरुहूतमिंद्रं स्वाहा। दध तु दीर्घायुस्त्वाय बलायवर्चसे सुप्रजास्त्वाय रक्ष रक्ष रिष्टनेमि स्वाहा' ७७ १

ऋषभ एव भगवान् ब्रह्मा भगवता ब्रह्मणा स्वयमेवाचीर्णानि
ब्रह्माणि तपांसि च प्राप्त परं पदम् । आरण्यके

दर्शयन् वर्त्मवीराणां सुरासुर-नमस्कृत ।
नीतित्रयकर्ता यो, युगादौ प्रथमो जिन ॥ स्मृति
शिवपुराण

ऋषभात् भारतो जात वीरपुत्रशताग्रज ।
राज्ये अभिषिच्य भरत महाप्रव्राज्यमाश्रित ॥ ब्रह्माण्ड पुराण

परमात्मानमात्मान लसत् केवल निर्मलम् ।
निरंजन निराकार ऋषभ तु महाऋषिम ॥ स्कन्ध पुराण

पद्मासनसमासीन श्याममूर्ति दिगम्बर ।
नेमिनाथ शिवायेत्, नामचक्रस्य वामन ॥ प्रभास पुराण

सर्वज्ञ सर्वदर्शी च सर्वदेव नमस्कृत ।
छत्रत्रयीभिरापूज्यो मुक्तिमार्गमसौवदन् ॥ शिवपुराण

कैलासे विमले रम्ये ऋषभोऽयं जिनेश्वर ।
चकार स्वावतार यो सर्व सर्वगत शिव ॥ शिवपुराण

अष्टषष्टिषु तीर्थेषु यात्रायां यत्फल भवेत् ।
आदिनाथस्य देवस्य, स्मरणेनापि तद्भवेत् ॥ नागपुराण



पुराणों में जैन तीर्थ वर्णन

रवताद्री जिना नमि युगादि विमलाचले ।
ऋषिणामाश्रमादेव, मुक्तिमार्गस्य कारणम ।। महाभारत

वामनन रवत, श्रीनमिनाथाग्रे ।
बलिबन्धन सामर्थ्यार्थं तपस्तपे ।। वामनावतार

  

॥ अरिहंत शरणम् ॥

॥ श्री जिनशासनम् ॥

॥ श्री आत्मकमल लब्धिसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ यात्रा अनुमोदना समिति

कार्यालय– कुंथुनाथ जैन मंदिर
६७ महात्मा गांधी रोड सिकन्दराबाद

प्रमुख
माणकचन्दजी कटारिया
मद्रास १

उप प्रमुख
लक्ष्मीचन्दजी कोठारी
बेंगलोर २,
खेमचन्दजी बी फतेहपुरिया, ट्र
वर्धा

मन्त्री
राजूभाई एम. दलाल
सिकन्दराबाद

सह मन्त्री
पुखराजजी
मद्रास

प्रादेशिक मन्त्री
कालूरामजी ताराचन्दजी बाठ
धारापाट
दलाल भाईलाल डाह्याभाई
अहमदनगर
नागपुर १
ताराचन्दजी कोरडिया
हैदराबाद